अध्याय 7

प्रदेश के प्रभावशील क्षेत्र एवं राजवंश

ग्वालियर क्षेत्र

ग्वालियर क्षेत्र ने अनेक प्रतापी राजवंशों का उदय और पतन देखा है। इनमें प्रतिहार, कच्छपघात, तोमर, मुगल और फिर सिंधिया राजवंशों के नाम उल्लेखनीय हैं-

प्रतिहार

नवीं शताब्दी के मध्य में ग्वालियर का इलाका प्रतिहार शासक के अधिकार में आ गया था। भोज प्रतिहार ने पर्याप्त कीर्ति अर्जित की। उसके दो शिलालेखों से ग्वालियर की आर्थिक-सामाजिक-प्रशासनिक जानकारी मिलती है।

कच्छपघात

कच्छपघात राजवंश का प्रथम राजकुमार लक्ष्मण था। उसका अंतिम राजा संभवत: तेजकरण था। सन् 1195-96 में मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय ग्वालियर, प्रतिहार सरदार सल्लक्षण या लोहंग देव के अधिकार में था।

तोमर

चौदहवीं शताब्दी के अंत में राजपूतों के ग्वालियर क्षेत्र तोमर वंश के अधिकार में आ गया। उन्होंने लोदी सल्तनत के पतन तक यहाँ अपना अधिपत्य बनाए रखा। इस वंश का संस्थापक वीरसिंह देव था। इस राजवंश का सबसे विख्यात राजा मानसिंह था, जिसके द्वारा निर्मित मानमंदिर तथा गूजरीमहल आज भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। वह संगीत का महान् पारखी था। उसकी संगीत रचनाएँ आज भी प्रचलित हैं। मानसिंह के आश्रम में संगीत की ग्वालियर शैली का जन्म हुआ। उसके समय में लोदियों और तोमरों में भयानक युद्ध हुए। परन्तु मानसिंह के जीवित रहते, ग्वालियर की स्वतंत्रता को आँच नहीं आई।

गूजरी महल

मानसिंह की मृत्यु के बाद ग्वालियर लोदियों के कब्जे में आ गया, जिनसे बाबर ने किला छीना। बाबर ने अपनी आत्मकथा (बाबरनामा) में सन् 1528 की ग्वालियर यात्रा का वर्णन किया है। तोमर वंश का अंतिम राजा रामशाह था।

सिंधिया

सन् 1715 से ही मालवा पर मराठों के हमले शुरू हो गए थे। सन् 1730-31 में पेशवा ने मालवा का राज-काज होल्कर तथा सिंधिया को सौंप दिया। सन् 1761 के पानीपत के युद्ध में पराजय के कारण मराठा शक्ति को भारी आघात पहुँचा। परन्तु महादजी सिंधिया ने मराठा प्रभुत्व की पुनः स्थापना की। उसी समय से ग्वालियर राज्य का क्षेत्र भिण्ड-मुरैना से लेकर उज्जैन तथा मंदसौर तक विस्तृत था। सिंधिया राजवंश के शासन में रहा। बाद में यह मध्य भारत क्षेत्र में शामिल हो गया है। मध्य भारत क्षेत्र की 25 रियासतों और राजवाड़ों में ग्वालियर भी शामिल था।

मालवा क्षेत्र

होल्कर

पेशवा ने दिनांक 3 अक्टूबर 1730 को मल्हार राव होल्कर को मालवा प्रांत में सर्वोच्च कमान सौंप दी और 1931 को रानोजी सिंधिया को प्रशासनिक मामलों से सम्बद्ध कर लिया गया। बाद में बाजीराव पेशवा ने मालवा प्रांत को सिंधिया, होल्कर तथा तीन पवारों के बीच विभाजित कर दिया, जिससे इन्दौर, ग्वालियर, धार, देवास सीनियर और देवास जूनियर राज्यों की नींव पड़ी। होल्कर राजवंश इन्दौर रियासत में 1948 तक सत्ता में बना रहा एवं जब 1948 में मध्य भारत राज्य बना तो इन्दौर रियासत का उसमें विलय हो गया।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र

बुन्देलखण्ड क्षेत्र लगभग चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ तक चंदेलों के अधिकार में रहा। लगभग 13वीं शताब्दी में बुन्देलों ने इस क्षेत्र में प्रवेश किया। चंदेलों के पतन के साथ ही बुन्देलों का उत्कर्ष प्रारंभ हुआ। सन् 1531 में रुद्रप्रताप बुन्देला ने ओरछा में राजधानी के नींव डाली। बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विभिन्न रियासतों के संस्थापक अपनी उत्पत्ति रुद्रप्रताप बुन्देला के 12 पुत्रों से मानते हैं।

बाद में, चम्पतराम बुन्देला ने मुगल कब्जे के विरुद्ध जीवन भर संघर्ष किया। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र, छत्रसाल बुन्देला ने यह संघर्ष जारी रखा और अंततः बुन्देलखण्ड से मुगल अधीनता उतार फेंकने में उनको सफलता मिली। उन्होंने सन् 1675 में पन्ना को अपनी राजधानी बनाया। इलाहाबाद के मुगल सूबेदार मुहम्मद खाँ बंगश के विरुद्ध में छत्रसाल को बाजीराव पेशवा की सहायता लेना पड़ी। छत्रसाल की वीरता इस उदाहरण से सिद्ध है कि 80 वर्ष की आयु में भी वे बुन्देला सेना की कमान सम्हाले थे।

सन् 1803 की वेसीन की संधि के पश्चात् बुन्देलखण्ड की रियासतें तथा वर्तमान महाकौशल का सागर-नर्मदा क्षेत्र अंग्रेजों के प्रभाव और अधिकार में आ गया।

बघेलखण्ड क्षेत्र

बघेलखण्ड के कुछ क्षेत्र 14वीं शताब्दी में बघेल राजपूतों के अधिकार में आ गए। बघेल अपनी उत्पत्ति गुजरात के चालुक्य या सोलंकी वंश से मानते हैं। अलाउद्दीन खिलजी के सेनापतियों ने सन् 1299 में कर्ण के शासन काल में गुजरात पर आक्रमण किया। अतः उसके वंशज कालिंजर आ गए। राजा वीरसिंह (सन् 1500-1540) के समय में बघेल राज्य की सीमा का अधिकतम विस्तार हुआ। वह महान् विजेता था। उसने परिहारों से नागौद और कनारो से बाँघोगढ़ विजित कर लिया और शहडोल क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। कहा जाता कि उसने गढ़ा-मंडला के गोंड़ राजा को पराजित किया और रत्नपुर के कलचुरियों से एक बड़ी राशि वसूल की। महाराजा रामचंद्र, अकबर के समकालीन थे। उनका शासनकाल कला और साहित्य का स्वर्ण युग कहलाता है। कहते हैं उन्होंने रहीम कवि को एक लाख रुपया और तानसेन को एक करोड़ रुपया दिया था। बघेल राजवंश में, जिनकी राजधानी बाद में रीवा बनाई गई, अनेक पराक्रमी, कलाप्रिय और साहित्यकार शासक हुए। उनका शासन सन् 1948 तक चलता रहा,।

अप्रैल 1948 में रीवा राज्य तथा बघेलखण्ड और बुन्देलखण्ड की 35 रियासतों के विलय से विन्ध्यप्रदेश राज्य का गठन किया गया।

भोपाल रियासत

भोपाल, राजा भोज के राज्य का भाग रहा है। बाद में भोपाल रियासत की नींव दोस्त मोहम्मद खाँ नामक एक अफगान ने डाली। वह 1696-97 में भारत आया था। पहले वह मुगल सेना में था। सन् 1715 में उसने भोपाल में देवरा चौहानों से जगदीशपुर का इलाका छीन लिया और उसका नाम इस्लाम नगर कर लिया और उसे अपनी राजधानी बनाया।

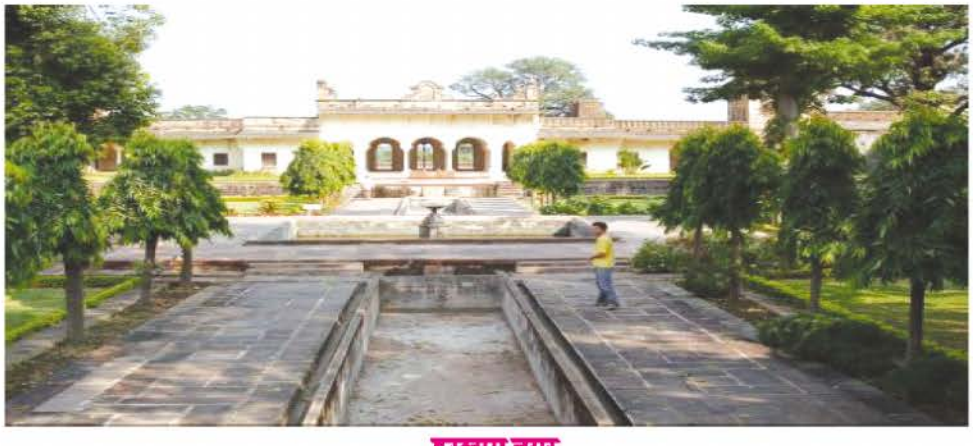

इस्लाम नगर

धीरे-धीरे उसने और क्षेत्र जीत लिए। वह स्वतंत्र हो गया और नवाब की उपाधि धारण कर ली। भोपाल रियासत की यह मुख्य विशेषता है कि यहाँ चार पीढ़ियों तक बेगमों का शासन रहा। उनके नाम हैं कुदसिया बेगम,

सिकन्दर बेगम, शाहजहाँ बेगम तथा सुल्तानजहाँ बेगम। भोपाल में नवाबी शासन 1949 तक बना रहा और 1 जून 1949 को रियासत भारत में मिला ली गई।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

प्रश्न-1 कच्छपघात राजवंश का प्रथम राजकुमार..... था।

प्रश्न-2 राजा मानसिंह द्वारा निर्मित मानमंदिर तथा..... आज भी पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं।

प्रश्न-3 तोमर वंश का अंतिम राजा .....था।

प्रश्न-4 महादजी सिंधिया ने.....प्रभुत्व की पुनः स्थापना की।

प्रश्न-2 लघुत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न-1 ग्वालियर क्षेत्र के प्रमुख राजवंश कौन-कौन से रहे?

प्रश्न-2 राजा मान सिंह का ग्वालियर क्षेत्र में क्या-क्या योगदान रहा?

प्रश्न-3 होल्कर राजवंश में मध्यप्रदेश का कौन-सा क्षेत्र था?

प्रश्न-4 महाराजा छत्रसाल मध्यप्रदेश के किस क्षेत्र से संबंधित है?

प्रश्न-5 विंध्य प्रदेश में कौन से क्षेत्र शामिल हैं?

प्रश्न-6 मध्यप्रदेश के किस क्षेत्र में चार पीढ़ियों तक बेगमों का शासन रहा?